साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

शहंशाह -ए- तरन्नुम- मोहम्मद रफी

संदर्भ:- 31 जुलाई(पुण्य तिथि)

राजेश कुमार शर्मा"पुरोहित"

हिंदी सिने जगत के सुप्रसिद्ध पार्श्व गायकों में मोहम्मद रफी का नाम अव्वल था।रफी साहब की आवाज़ में गजब की मिठास थी।

वो सुर सम्राट थे। इसीलिए उनकी अलग पहचान थी। उनकी गायकी से प्रभावित होकर सोनू निगम उदित नारायण बहुत प्रभावित हुए।मुहम्मद अजीज को उन्होंने प्रेरित किया। 1940 से 1980 तक रफी साहब ने तकरीबन छब्बीस हज़ार गाने गाए। उन्होंने गीत ग़ज़ल भजन कव्वाली,देशभक्ति गीत भी गाये।

साथ ही हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी गीत गाये।

उनके गीतों को हिन्दी सिनेमा के सुपर स्टार गुरुदत्त जी दिलीप कुमार साहब, देव आनंद जी,राजेश खन्ना,राजेन्द्र कुमार, जानी वाकर धर्मेंद्र जितेंद्र,अमिताभ बगान,किशोर कुमार,ऋषि कपूर पर फिल्माए गए। 24 दिसम्बर 2017 अमृतसर के पास कोटड़ा में जन्म हुआ था। इनके परिवार में संगीत का कोई माहौल नहीं था। एक फ़क़ीर की आवाज़ इन्हें पसंद आई । रफी साहब उस फकीर की नकल कर सीखने लगे। बड़े भाई की नाई की दुकान पर रफी साहब गाते । लोग उनकी

गायकी की प्रशंसा करने लगे। इनकी रुचि को देखते हुए संगीत सीखने हेतु उस्ताद अब्दुल वाहिद खान से संगीत की तालीम ली।

एक बार ऑल इंडिया रेडियो के कार्यक्रम में कुंदन लाल सहगल को बुलाया गया था। बिजली गुल होने से भीड़ की व्यग्रता को देख इनके बडे भाई ने कहा। आयोजक मान गए और रफी साहब को अवसर मिल गया।

मात्र तेरह साल के बालक रफी ने पहली बार गीत आम जनता के सामने गाया। सबको उनकी गायकी पसंद आई। उस समय के प्रसिद्ध संगीतकार श्यामसुंदर ने उन्हें गाने के लिए सादर आमंत्रित किया था।

रफी साहब ने पहला गीय 1944 में गाया था। 1946 में बॉम्बे गए। संगीतकार नोशाद साहब से मिले। पहले आप फ़िल्म में इन्हें गाने का मौका दिया।

अनमोल घड़ी फ़िल्म 1946 में बनी जिसमे इनहोंद तेरा खिलौना टूट गया गाया। रफी ख्याति प्राप्त हो गए। शहीद मेला में गीत गाये।

राजकपूर साहब के पसंद के शंकर जयकिशन ने भी रफी साहब को मौका दिया। सचिन देव बर्मन,ओ पी नैयर आदि ने भी इनकी आवाज से प्रभावित हो अवसर दिया। मदन मोहन,जयदेब,सलिल चौधरी बहुत प्रभावित हुए।

1950 से 1960 तक रफी साहब ने खूब गीत गाये। 1960 की फ़िल्म चौदहवीं का चांद आई जिसके लिए उन्हें फ़िल्म फेयर मिला। 1961 में घराना व काजल 1965 में, दो बदन 1966 में, नीलकमल 1968 में रफी साहब के शानदार नगमें हैं।

फ़िल्म ससुराल के गीत तेरी प्यारी प्यारी सूरत को किसी की नज़र न लगे हेतु दूसरा फ़िल्म फेयर मिला। चाहूँगा मैं तुझे सांजग सवेरे गीत के लिए उन्हें तीसरा फ़िल्म फेयर अवार्ड मिला। यह दोस्ती फ़िल्म में है।

1965 में रफी साहब को सरकार ने पदम श्री पुरस्कार से सम्मानित किया था। 1966 में चौथा फ़िल्म फेयर पुरस्कार से नवाजा गया। फ़िल्म सूरज के गीत बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है।

पांचवा फ़िल्म फेयर पुरस्कार फ़िल्म ब्रह्मचारी के गीत दिल के झरोखे में तुझको बिठाकर के लिए दिया गया।

शर्मीले स्वभाव के रफी साहब ने बेगम विकलिस से शादी की थी उनके चार लड़के व तीन बेटियां थे। हंसमुख व दरियादिल इंसान एक महान गायक थे। गाने का एक बार रुपया मिलने के बाद वह रॉयल्टी नहीं लेने में विश्वास करते थे। उन्होंने लक्ष्मीकांत प्यारेलालजी की सुप्रसिद्ध जोड़ी के लिए शुरू में कम रुपयों में गीत गाये। वे रुपयों को लेने में कम विश्वास करते थे। ऐसे सुर सम्राट का 31 जुलाई 1980 को ह्रदयगति रुक जाने से मुम्बई में देहांत हुआ। लेकिन आज भी रफी साहब के गीत सदियों तक गूंजते रहेंगे। गीत अमर हो गए।

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में 1944 से 1980 के मध्य 28000 गाने रिकॉर्ड करने का श्रेय रफी साहब को दिया।

रफी साहब के लोकप्रिय देशभक्ति गीत अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों,हम लाये हैं तूफान से कश्ती निकाल के,ये देश है वीर जवानों का, अपनी आजादी को हम, नन्हे मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है, विवाह गीत आज मेरे यार की शादी है, बाबुल की दुआएं, आज भी लोकप्रिय हैं।

बैजू बावरा,जाग्रति,प्यास,गुमनाम,कोहीनूर उनकी प्रसिद्ध फिल्में हैं।

उनका आखरी गीत फ़िल्म आसपास में था। गीत के बोल थे "शाम क्यों उदास है दोस्त" जब मोहम्मद रफी साहब का मुम्बई में निधन हुआ उस दिन मूसलाधार बारिश हुई फिर भी उनकी अंतिम यात्रा में दस हज़ार लोग सड़कों पर थे। उस समय फ़िल्म अभिनेता मनोज कुमार ने कहा था "सुरों की माँ सरस्वती भी अपने आँसूं बहा रही है आज।

6 फ़िल्म फेयर अवार्ड एक नेशनल अवार्ड उन्हें मिला।

उन्होंने असमी,कोंकणी,उड़िया,मराठी,पंजाबी,भोजपुरी,इंग्लिश,पारसी बंगाली आदि भाषाओं में गीत गाये।

आओ आज हम रफी साहब को याद करें। उस महान कलाकार को करोड़ों सलाम।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें